भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के विकास में अन्ना हजारे की भूमिका

ROLE OF ANNA HAZARE IN DEVELOPMENT OF POLITICAL SYSTEM IN INDIA

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

को

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रारूप

(कला संकाय)

शोधार्थी

चन्द्रा सोलंकी

शोध निर्देशक

डॉ. अशोक तंवर

विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग

एस.बी.के. राजकीय महाविद्यालय, जैसलमेर

सत्र - 2011

APPENDIX -VI

CERTIFICATE BY SUPERVISOR

Certified that:-

1. I am willing to guide the research work of. **Smt. CHANDRA SOLANKI** on the above subject if he/she registered for Ph. D.
2. To the best of my knowledge the subject ~~selected~~ has not been studied and is not being studied so far in any university.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have ~~seen~~ and approved the outline ~~and bibliography etc.~~ submitted by the candidate.
5. Necessary facilities are available in the Department for the above research work (Certificate from Principal Head. Univ. Dept. With regards to facilities available is enclosed).
6. I have research candidate registered under my supervision~ and the serial number of this candidate whose application being forwarded for registration is 01.
7. The candidate is not a close relation (the term close relation is defined in the examination ordinance of the University.)

Research Supervisor

Signature of Supervisor With Date

Certified that the available facilities will be extended, to Smt. CHANDRA SOLANKI for research works if she registered for Ph.D.

Signature of the Principal
Director of the Institution
With date.

PRINCIPAL
S.B.K. Govt. College
JAISALMER

Signature of the Head of
Department With Date

Research Supervisor
S.B.K. Govt. College
Jaisalmer

APPENDIX –IV

Format for Outline of Proposed Research Work

1.	Name of the Scholar:(In English)	**CHANDRA SOLANKI**
	(In Hindi)	चन्द्रा सोलंकी
2.	Title of the Research work:	
	(In English)	**Role of Anna Hazare in development of Political System In India**
	(In Hindi)	भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के विकास में अन्ना हजारे की भूमिका
	Location	
3	(a) Institution/Department where the work is to be done.	राजनीति विज्ञान विभाग, एस. बी. के. राजकीय महाविद्यालय, जैसलमेर

4	Introduction Importance Proposed Investigation, Objectives.	Annexure I
5	Review (Work Already done on the subject of Proposed study.)	Annexure II
6	Research Gaps, Identified in the proposed filed of investigation. (Based on the review)	Annexure III
7	Major Hypothesis.	Annexure IV
8	Research methodology	Annexure V
9	List of references cited.	Annexure VI

Chandra

Signature of the Candidate with date

Outline Approved

Name and signature of supervisor with date and seal

Research Supervisor
S.B.K. Govt. College
Jaisalmer

Introduction :

आज समाज एवं राज्य व्यवस्था सहित सभी राष्ट्रीय संस्थाएं परिवर्तन काल से गुजर रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर वर्तमान तक भारतीय राजनीति का विकास विभिन्न रूपों में हुआ है। यह सर्वविदित तथ्य है कि एक लोकतांत्रिक देश में लोकतंत्र की सफलता जागरुक मतदाताओं पर निर्भर करती है।

भारतीय राजनीतिक व्यवस्थाओं के विश्लेषण करने हेतु हमें प्रथम कदमके रूप में राजनीति चेतना पर ध्यान देना होगा। भारतीय राजनीति का एक पक्ष जहाँ सकारात्मक है वही दूसरा पक्ष नकारात्मक है आज भारतीय राजनीति का जो ह्रास हो रहा है इसके पीछे कई कारण उत्तरदायी हो सकते हैं जैसे उत्तरदायित्व काअभाव नैतिक मूल्यों का पतन, भ्रष्टाचार आदि ।

ऐसा नहीं है कि ये बीमारियां पहले नही थी परन्तु आज इस बीमारी के नित्य नए मरीज सामने आ रहे है, और राजनीतिक क्षेत्र में तो भ्रष्ट्राचार ने नए कीर्तिमान स्थापित किए है। सन् 1962 के जीप कांड से लेकर आई.पी.एल. क्रिकेट तक इसका प्रभाव देखा जा सकता है।

इन समस्याओं के निराकरण हेतु कई संगठनों व संस्थाओं की स्थापना हुई जो कि अपने उद्देश्य में पूर्णरूपेण सफल नहीं हुई।

अतः भारतीय राजनीति को इस संकट से उबारने के लिए एक कदम अन्न हजारे ने बढाया जिसका साथ सत्तारूढ पक्ष के साथ विपक्ष ने भी दिया और सबसे महत्त्वपूर्ण नागरिक समाज भी उनके साथ कदम मिलाकर चला। भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के विकास में अन्ना हजारे का जन लोकपाल बिल लाने का प्रयास सराहनीय है।

15 जून 1938 को जन्में अन्ना हजारे सही मायनों में नई सदी के एक ऐसे लोकनायक है जिन्होंने राजनीतिक परिवर्तन की ऐसी आंधी चलाई कि हर कोई उनके पीछे लामबंद हो गया। उनकी अपील थी भ्रष्ट्राचार जाएगा तो सभी नागरिकों का जीवन सुख शान्ति से भरपूर हो जाएगा।

प्रस्तुत शोध में ऐसे ही व्यक्तित्व अन्ना हजारे के विचारों और राजनीतिक व्यवस्था के विकास में उनकी भूमिका का विश्लेषण किया जाएगा।

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक समंको, द्वितीयक संमकों के साथ केस स्टडी का प्रयोग किया जाएगा। विश्लेषणात्मक पद्धतियों के साथ अन्य प्रविधियों जैसे प्रश्नावली, अनुसूची सांख्यिकी आदि का सहयोग लिया जाएगा।

प्रस्तुत शोध हेतु विभिन्न लेखकों की पुस्तकों के अतिरिक्तपत्र-पत्रिकाओं, मीडिया, कम्प्यूटर आदि का भी प्रयोग किया जाएगा।

Importance of Proposed Investigation

प्रशासन की कुशलता के लिए केवल संगठन और उसकी कार्य प्रणाली में सुधार करना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि संगठन में कार्य करने वाले व्यक्ति प्रशिक्षित एवं योग्य हो और वे ईमानदारी से कार्य करते रहे. इसकी भी आवश्यकता है। अतः अन्ना हजारे द्वारा प्रस्तावित जन लोकपाल बिल इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण आयाम है।

भारत की राजनीतिक व्यवस्था के विकास में कई महत्वपूर्ण तथ्यों व व्यक्तियों की भूमिका रही इसके बावजूद भारतीय राजनीति के बाधक तत्व उत्पन्न होते जा रहे है, जो इसे खोखला करता जा रहे है, जिसमें से एक महत्त्वपूर्ण है भ्रष्टाचार। इस दानव के पसरने का महत्त्वपूर्ण कारण है भ्रष्टाचार निवारण संस्थाओं का अशक्त होना तथा सामाजिक जागरुकता का अभाव।

ऐसे में एक ऐसा लोकनायक उभरा जिसने गांधीवादी तरीके से भ्रष्टाचार का विरोध कर भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का रूख मोड़ दिया।

अतः ऐसे लोकनायक के व्यक्तित्व का अध्ययन करना जिसने भारतीय राजनीति के विकास के लिए नागरिक समाज को साथ लेते हुए जन लोकपाल बिल को पारित करवाने हेतु व्यापक जन समर्थन हासिल किया।

जहाँ जनता और प्रशासन के बीच की दूरी मिटाने के लिए सेवकों की आवश्यकता हैं वहीं अन्ना हजारे ऐसे सेवक के रूप में उभरे है जिनका ना तो पार्टी से संबंध है और ना ही किसी पद से स्वयं उन्हीं के शब्दों में वे भारतीय राजनीति के द्वारपाल है जो किसी भी कीमत पर भारतीय राजनीति को नुकसान पहुँचाने वाले तत्वों को अंदर आने की इजाजत नहीं देंगे।

Review of work already done on the subject of proposed research study :

1. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था लेखक अनूप चन्द कपूर, एस. चांद एण्ड कम्पनी नई दिल्ली, 1999। यह पुस्तक तीन भागों में विभक्तहै। प्रथम भाग में राज्य की प्रकृति और विकास का ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक अध्ययन विभिन्न अवधारणाओं के अन्तर्गत किया गया है द्वितीय भाग में भारत में संविधान सभा का निर्माण व विकास शासन के अंगों का गठन, शक्तियों व सम्बन्ध भारतीय राजनीति में विपक्ष पर उत्पत्ति सक्रियता, क्रियाशीलता व भूमिका का वर्णन किया गया है। तृतीय भाग में राज्य पर नियंत्रण की सीमाएं, कार्य व उपागमों का सैद्धान्तिक अध्ययन किया गया है।

2. भारतीय राजनीति की प्रवृत्तिया लेखक महावीर प्रसाद मोदी ओर सरोज मोदी, कॉलेज बुक डिपों, नई दिल्ली 1999। लेखक द्वारा पुस्तक को 17 भागों में बांटकर भारतीयराजनीति की प्रवृत्तियों को विश्लेषण किया गया है। प्रथम अध्याय में भारत में लोकतंत्र और राजनीति की प्रवृत्तियों के संदर्भ में राजनैतिक दल का विकास व भूमिका का विमोचनकिया गया है। अन्य अध्यायों में भारतीय राजनीति की विभिन्न प्रवृत्तियों का विवेचन किया गया है प्रतिपक्ष की भूमिका का सतही रूप से वर्णन किया गया है।

3. भारतीय राजनीति विकास और विश्लेषण लेखक विश्व प्रकाश गुप्त और मोहिनी गुप्ता, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2001 । पुस्तक 14 अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में प्राचीन भारतीय सभ्यता से आधुनिक काल में राज्यों के पुनर्गठन आदि का वर्णन किया गया है। द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, पष्ठ अध्याय में भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन 1857 से 1947 तक स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान विशेषकर महात्मा गांधी, सुभाषचन्द बोस, पं. जवाहर लाल नेहरु, वल्लभभाई पटेल के विशेष संदर्भ में किया गया है। सप्तम् और अष्ठम् अध्याय में

भारतीय संविधान के राष्ट्रीय आदर्श व राजनीतिक व्यवस्था के विभिन्न अंगों का वर्णन किया गया है। बारहवे अध्याय में नरसिम्हा राव से इन्द्रकुमार गुजराल तक के नेतृत्व में प्रतिपक्ष द्वारा भ्रष्टाचार, अयोध्या विवाद, यूरिया घोटाला, हवाला काण्ड, आंतकवाद पर भूमिका का विश्लेषण किया गया है। तेरहवे व चौदहवें अध्याय में भारत की विदेश नीति व प्रमुख व्यक्तित्व का वर्णन किया है।

4. भारतीय शासन राजनीति और संवैधानिक विकास लेखक आर.सी. अग्रवाल एस. चंद एण्ड कम्पनी नई दिल्ली, 2001 । पुस्तक तीन भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में भारत का संवैधानिक विकास व राष्ट्रीय आन्दोलन का वर्णन किया गया है। द्वितीय भाग में भारत का आधुनिक संविधान औरउसका विकास व शासन के अंगों का संरचनात्मक प्रकार्यात्मक अध्ययन के साथ साथ संसद में विपक्ष की भूमिका व उसके समक्ष आने वाली समस्याओं का समाधान सहित वर्णन किया गया है। तृतीय अध्याय में भारतीय प्रशासनिक व पंचायती राज का वर्णन किया गया है। पुस्तक में विपक्ष की स्थिति, स्वरूप शैली, कार्य, प्रभावोत्पादकता का अध्ययन सदन के अन्दर तो किया गया है। लेकिन सदन के बाहर इसकी भूमिका गत्यात्मकता, निरन्तरता व क्रियाशीलता का अध्ययन नहीं किया गया है।

5. भारतीय राजनीति व्यवस्था लेखक ए. सी. कपूर, एस. चांद एण्ड कम्पनी नई दिल्ली 2002। लेखक द्वारा पुस्तक 18 अध्यायों में बांटकर भातीय राजनीतिक व्यवस्था का वर्णन किया गया है। ग्यारहवे से तेहरवे अध्याय तक राज्य राजनीति के सम्बन्ध में वर्णन किया गया है। अन्य अध्यायों में भारत की प्रशासनिक संस्थाओं व भारतीय राजनीति के मुख्य मुद्दों का वर्णन किया गया। यह पुस्तक व्यवहारिकता पर आधारित ना होकर सैद्धान्तिकता का पुट लिये है।

6. राजनीतिक सिद्धान्त लेखक बी. बी. चौधरी श्री महावीर बुक डिपो नई दिल्ली, 2006 । पुस्तक 30 अध्यायों में विभक्त है प्रथम अध्याय से दसवें अध्याय तक राजनीति विज्ञान के आधारभूत सिद्धान्तों का सैद्धान्तिक वर्णन किया गया है। ग्यारहवें अध्याय से बायीसवें

अध्याय तक भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में भारत का संवैधानिक विकास कार्यपालिका व्यवस्थापिका, न्यायपालिका, मूल अधिकार नीति निर्देशक तत्व आदि का अध्ययन किया गया है। तेइसवें अध्याय में राजनीतिक दलों की कार्यप्रणाली व भूमिका के साथ-साथ विपक्ष की भूमिका का विशद वर्णन किया गया है। चौबीसवें अध्याय से अन्तिम अध्याय तक राजनीतिक दलों के साथ विपक्ष की भूमिका का अलोचनात्मक वर्णन तो किया गया है, लेकिन 14 वीं लोकसभा में सतारूद प्रतिपक्ष की भूमिका का विश्लेषण नहीं किया गया है।

7. जन लोकपाल बिल (द बिगनिंग ऑफ ए न्यू. एरा) के लेखक एम.के. सिंह है। यह पुस्तक आठ अध्यायों में विभक्तहैं। पुस्तक पूर्ण रूप से अन्ना हजारे द्वारा समर्थित जन लोकपाल बिल पर आधारित है।

8. भारत में प्रशासन जिसके लेखक आर.के. दुये 11 खण्डों में विभाजित हैं। उक्त पुस्तक में भ्रष्टाचार के कारण, प्रकार, समाप्त करने हेतु सुझाव लोकपाल विधेयक 1970 आलोचना का विश्लेषण किया गया है। उक्त पुस्तक में लोकपाल की सार्थकता नहीं बताई गई है।

9. लोकनायक अन्ना हजारे के लेखक देवप्रकाश चौधरी है। उक्तपुस्तक में अन्ना हजारे के जीवन की झांकी प्रस्तुत की गई है तथा जन लोकपाल बिल की आवश्यकता, महत्व का उल्लेख किया गया है।

Research Gaps Indentified in the proposed field of investigation :

1. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करने वाले तत्वों जैसे - धर्मनिरपेक्षता, अपराधीकरण, बिना दायित्व सत्ता का उत्तरदायित्व, भीड़ तंत्र, अवसरवादिता, चारित्रिक पतन आदि तत्वों की समीक्षा की जायेगी तथा यह जानने का प्रयत्न किया जायेगा कि उपर्युक्त तत्व भारत की राजनीति को किस प्रकार से प्रभावित कर सकते है।

2. भारतीय राजनीति के विकास में अब तक जिन व्यक्तियों की भूमिका रही वे अधिकतर किसी न किसी पार्टी अथवा पद से जुड़े थे।

   परन्तु किसी ऐसे व्यक्ति का सहयोग नहीं रहा जो बिना किसी सहारे के राजनीति में नवीन प्रवृत्तियों को उत्पन्न कर सकें। इस संदर्भ में यह शोध ऐसे व्यक्तिपर आधारित होगा जो राजनीति में सेवा के लिए उतरा हो और जिसका किसी भी राजनीतिक बुराई से सम्बन्ध ना हो।

3. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के विकास में रुकावट मुख्य तत्व भ्रष्टाचार है। जोकि आग की तरह फैल रहा है। क्योंकि व्यापक जन समर्थन का अब तक अभाव रहा है।

4. भारत में अभी तक ऐसे किसी व्यक्तिका अध्ययन नहीं किया गया है जिसने भ्रष्टाचार निवारण में इतनी अहम भूमिका निभाई हो और जिसे जन लोकपाल के माध्यम से व्यापक जन समर्थन हासिल हुआ हो।

5. भारतीय राजनीति में उभरती नवीन प्रवृत्ति जन लोकपाल बिल पर अभी तक कोई अध्ययन नहीं हुआ है। इस प्रवृत्ति का भारतीय संसदीय लोकतंत्र पर उसकी व्यावहारिकता पर, भारतीय राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ा है? क्या पड सकता है और इसे कैसा होना चाहिए इस संदर्भ में यह शोध अनुपलब्ध जानकारी को तथा भारतीय राजनीति व्यवस्था के नवीन आयामों को सामने लाने का प्रयास करेगा।

6. अन्ना हजारे के जन लोकपाल को बिल के माध्यम से भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के नवीन आयामों का व्यावहारिक रूप से अध्ययन किया जाएगा कि यह बिल भ्रष्टाचार तथा उससे जुड़े अधिकारियों को दूर करने में कहाँ तक सफल होता है।

7. भारत की राजनीति को विकसित करने वाले सकारात्मक व नकारात्मक तत्वों की समीक्षा की जाएगी तथा भारतीय राजनीति में सेंध लगाने वाले उत्तरदायी तत्वों का अध्ययन किया जाएगा।

इस संदर्भ में यह शोध अनुपलब्ध जानकारी को तथा भ्रष्टाचार से सम्बंधित अन्ना हजारे की नवीन प्रवृत्तियों को सामने लाने का प्रयास करेगा।

Objectives :

1. प्रस्तुत शोध का उद्देश्य भारतीय राजनीति को प्रभावित करने वाले सकारात्मक व नकारात्मक तथ्यों का अध्ययन करना है, जिससे यह जाना जा सके कि वर्तमान में भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का स्तर क्यों गिरता जा रहा है, उसके कौन-कौन से कारण जिम्मेदार है तथा इन विसंगतियों के कैसे दूर किया जा सकता है ?

2. वर्तमान की ऐसी रातनीतिक घटनाओं की समीक्षा करना जो यह साबित करती हो कि भारतीय राजनीति का पतन होता जा रहा है।

3. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के विकास में अन्ना हजारे की भूमिका का अध्ययन करना जिससे जनता की शासन में भागीदारी का पता चलता हो।

4. भारतीय राजनीति को खोखला करने वाले भ्रष्टाचार के कारणों का अध्ययन किया जाएगा।

5. प्रस्तुत शोध विशेषकर भारतीय राजनीति के विकास को अग्रसर करने में अन्ना हजारे की भूमिका का विश्लेषण निम्न रूपों से करेगें जैसे -

   1) प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य वर्तमान राजनीति के व्यावहारिक स्वरूप का विश्लेषण करना है।

   2) भ्रष्टाचार पर अन्ना के विचार

   3) अन्ना हजारे और जन लोकपाल बिल

   4) इस बिल का लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था पर प्रभाव।

   5) क्या यह बिल भ्रष्टाचार को दूर करने में कारगर होगा।

   6) क्या इस बिल के माध्यम से जनता और शासनके बीच नजदीकियाँ आयेगी।

   7) क्या जन लोकपाल बिल सरकारी बिल से अधिक उचित है।

Hypothesis :

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना है – भारतीय राजनीति की प्रकृति स्वरूप व प्रक्रिया के निर्धारण में अन्य तत्वों के साथ नागरिक समाज भी जिम्मेदारहै, अतः भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को नवीन आयाम देने वाले ऐसे ही लोकनायक अन्ना हजारे की भूमिका का अध्ययन किया जाएगा।

उपर्युक्त परिकल्पना का परीक्षण निम्न आधार पर किया जाएगा।

1) भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की विभिन्न प्रवृत्तियों की समीक्षा की जाएगी।

2) भारतीय राजनीति की प्रकृति रूवरूप व शैली के निर्धारण में नागरिक समाज की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है।

3) भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को खोखला करने वाले भ्रष्टाचार पर अन्ना हजारे के जन लोकपाल बिल संबंधी तथ्यों का विश्लेषण किया जायेगा।

Research Methodology :

विषय प्रवेश करते समय उपलब्ध विषय सामग्री व संबंधित तथ्यों की व्याख्या विश्लेषणात्मक और अन्वेषणात्मक तरीके से की जाएगी। यह अध्ययन प्राथमिक समंकों की अपेक्षा द्वितीयक समंकों पर अधिक निर्भर रहेगा। प्रस्तुत अध्ययन में शोध अधिकतम वैज्ञानिक तुलनात्मक पद्धति के संदर्भ में समंको का संकलन, साक्षात्कार, प्रश्नावली, अवलोकन आदि विधियों से करेगे और समंकों को समझने और समंकों का वर्गीकरण करके उनको समझने और सहसम्बंध जानने के लिए एक तरफ जहाँ अर्थव्याख्यावाद विषयवस्तु, विश्लेषण आदि तकनीकों विषयवस्तु विश्लेषण आदि तकनीकों का सहारा लिया जायेगा वही दूसरी ओर परिमापन कोडिंग और निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए सांख्यिकी पद्धति व अन्य विधियों का भी सहारा लिया जायेगा।

Chapter wise details of proposed Research :

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के विकास में अन्ना हजारे की भूमिका

1	अध्याय प्रथम	-	भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के विकासात्मक तत्व ।
2	अध्याय द्वितीय	-	अन्ना हजारे का जीवन परिचय।
3	अध्याय तृतीय	-	भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में अन्ना हजारे - (1) सामाजिक कार्यकर्ता के रूप (2) राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में
4	अध्याय चतुर्थ	-	अन्ना हजारे एवं भ्रष्टाचार
5	अध्याय पंचम	-	अन्ना हजारे : जन लोकपाल बिल
6	अध्याय षष्ठ	-	समालोचना एवं निष्कर्ष

अध्याय प्रथम

भारत की राजनीतिक व्यवस्था को विकसित करने वाले तत्वों जैसे मौलिकता, नैतिकता, लोकतंत्रात्मकता आदि की समीक्षा की जाएगी। तथा इस तथ्य का अध्ययन किया जायेगा कि इन तत्वों का राजनीति पर किस प्रकार से सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

अध्याय द्वितीय

अन्ना हजारे का संक्षिप्त परिचय उनका जन्म व्यवसाय, किशन बाबू राव हजारे से अन्ना हजारे बनने की उनकी कहानी को संक्षिप्त रूप से दर्शाया जाएगा।

अध्याय तृतीय

अन्ना हजारे की सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका को वाटर शेड डेवलपमेंट प्रोग्राम आर्थिक उन्नत स्तर, जातिगत भेदभाव को दूर, राइट टू इन्फाफर्मेशन आदि के संदर्भ में दर्शाया जाएगा।

भारतीय राजनीति को खोखला करने वाले बाधक तत्वों को दूर करने के प्रयास में अन्ना हजारे की जन लोकपाल बिल को लाने की भूमिका को विश्लेषित किया जायेगा। साथ ही एक राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप अन्ना हजारे की राजनीतिक भूमिका को प्रस्तुत किया जायेगा।

अध्याय चतुर्थ

भारतीय राजनीति में सेंध लगाने वाले भ्रष्टाचार पर अन्ना हजारे के विचारों को प्रस्तुत किया जाएगा कि भ्रष्टाचार के बारे में उनके क्या विचार है। भ्रष्टाचार के कारणों तथा उनको दूर करने हेतु कौन-कौन से कदम उठाये जाने चाहिए।

अध्याय पंचम

भ्रष्टाचार निवारण में जन लोकपाल बिल के संदर्भ में अन्ना हजारे की भूमिका का विश्लेषण किया जाएगा कि इस बिल के माध्यम से ऐसा कानून बने जो भ्रष्ट राजनेताओं व अधिकारियों को तय सीमा के भीतर दण्डित कर सके और साथ ही उसमें जनता की भी भागीदारी हो।

यदि जन लोकपाल बिल लागू होगातो इसका भ्रष्ट राजनेताओं व अधिकारियों पर क्या असर पडेगा, लोकपाल भ्रष्ट्राचार को दूर करने हेतु सरकारी लोकपाल बिल की अपेक्षा जन लोकपाल बिल अधिक उपयुक्तकैसे है आदि के आधार पर इसकी समीक्षा की जाएगी।

अध्याय षष्ठ

इस अध्याय में अध्ययन के निष्कर्ष को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाएगा। उपर्युक्त अध्ययन हेतु विभिन्न शोध प्रविधियों और पद्धतियों का सहारा लिया जायेगा।

Bibliography :

Books -

1. अवस्थी, अरोडा — नौकरशाही और भारतीय राजनीतिक विकास
2. अवस्थी माहेश्वरी — भारतीय प्रशासन
3. कपूर, अनुपचन्द — भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, एस चांद एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, 1999.
4. कपूर एस. सी — भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, एस,. चांद एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली 2002.
5. कर्वे, टी. जी. — भारतीय प्रशासन के प्रत्यक्ष सिद्धान्त, लोक प्रशासन बिल-1 जनवरी मार्च 1995
6. गुप्ता कुमार विजय — जनलोकपाल (भारतीय भ्रष्टावार, निवारण, आंदोलन) एम. डी. पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड, 2011
7. गुप्ता विश्व प्रकाश — भारतीय राजनीतिक विकास और विश्लेषण, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली।
8. गैना सी. बी. — आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त विकास पब्लिकेशन हाऊस प्र. लि. दिल्ली।
9. गौड़, संजय — अगस्त क्रान्ति का महानायक रू अन्ना हजारे
10. गोरवाला ए. डी. — भारतीय प्रशासन की रिपोर्ट
11. चतुर्वेदी — भारत का प्रशासन
12. चौधरी देव प्रकाश — लोकनायक अन्ना हजारे, हिन्द बुक्स प्राईवेट लिमिटेड 2011, नई दिल्ली।
13. चंदा अशोक — भारतीय प्रशासन

14. जैन, पुखराज	भारतीय शासन एवं राजनीतिक 1988 साहित्य भवन, आगरा।
15. जौहरी एस. सी. सीमा	आणुनिक भारतीय राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त, 2002, स्तर्लिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
16. दुबे आर.के.	भारत में राजनीति प्रशासन
17. नागर पुरुषोत्तम	आधुनिक भारतीय एवं राजनीतिक चिन्तन
18. टीड ओर्ड ने	एडमिनिस्ट्रेशन इट्स परपज एंड परफोरमेंस
19. टेक्समेन	गाइड टू लोकपाल बिल, 2011 टेक्समेन प्राइवेट लिमिटेड
20. पालखीवाला, नानी	हम हिन्दुस्तानी
21. फडिया बी. एल.	राजनीति विज्ञान के मूल आधार कॉलेज बुक जयपुर, 1996
22. भगत चेतन	क्रान्ति 2009
23. माहेश्वरी एस. आर.	भारतीय प्रशासन, उनका विकास आगरा प्रकाशन, 1995-96
24. माथुर	शोध प्रविधि एवं सांख्यिकीय विधियां, अजमेर प्रकाशन, 2009
25. मुकर्जी, रवीन्द्रनाथ	सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, 2009
26. मोदी, महावीर प्रसाद	कॉलेज बुक डिपों नई दिल्ली 1991
27. वेंकटेश्वर	लोकपाल फैक्टस एंड आर्गुमेंटस
28. शर्मा अशोक	भारतीय में स्थानीय प्रकाशन शीतल प्रकाशन, जयपुर 2004
29. शर्मा हरीशचंद	भारत में राज्य प्रशासन
30. सिंह वीरकेश्वर प्रसाद	भारतीय संविधान एवं शासन ज्ञानदा, प्रकाशन, नई दिल्ली

Articles -

1. अशोक कुमार अवस्थी लोकपाल विधेयक की परिधि और प्रासंगिकता प्रतियोगिता दर्पण 2005

2. सुरेन्द्र राय- भ्रष्टाचार एक समस्या कारण एवं उसका निदान ।

Journal and News Paper -

1. इकॉनोमी एण्ड पॉलिटिकल बीकली, मुम्बई।

2. इंडिया टुडे

3. जनसत्ता

4. दैनिक भास्कर

5. राजस्थान पत्रिका

6. सहारा समय